International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के आत्म–प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन

प्रतिभा गोयल
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. किरण मिश्रा
विभागाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के आत्म–प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 200 छात्रों (100 शहरी एवं 100 ग्रामीणं) का चयन कर उन पर 'आत्म–प्रत्यय प्रश्नावली' का प्रशासन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के शारीरिक, सामाजिक, शैक्षिक व बौद्धिक आत्म–प्रत्यय में सार्थक अंतर पाया गया जबकि स्वभावगत, नैतिक एवं समग्र आत्म–प्रत्यय में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

शिक्षा प्रकाश का ऐसा जीवन स्त्रोत है, जो व्यक्ति को सुखमय जीवन प्रदान करने की निमित्त सच्चा मार्ग प्रदान कर उसमें मनुष्यता के भाव जागृत कर, उसके जीवन को दिव्य से दिव्यतम बनाती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति पशुवत् प्रवृति से ऊपर उठकर मानव बनता है। शिक्षा का सर्वप्रमुख उद्देश्य छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने के साथ ही उनमें उत्तम गुणों का विकास करना भी है। छात्रों के व्यक्तित्व का निर्धारण करने में अनुवांशिकता एवं वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कोई भी व्यक्ति अपनी अनुवांशिकता में परिवर्तन नहीं कर सकता, परंतु वह अपने वातावरण को स्वयं के अनुकूल बना सकता है। विभिन्न शोध अध्ययनों द्वारा भी यह सिद्ध किया जा चुका है, कि व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारकों में वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः यदि हमें विद्यार्थियों का सकारात्मक व्यक्तित्व निर्माण करना है, तो उसे ऐसा वातावरण प्रदान करना होगा, जिससे उसमें

स्वयं अनुकरण के द्वारा उच्च कोटि के व्यक्तित्व का विकास हो सके, यदि व्यक्तित्व विकास सकारात्मक दिशा में होगा तो आत्म–प्रत्यय भी उच्च कोटि का विकसित होगा क्योंकि आत्म–प्रत्यय को व्यक्तित्व का केन्द्र बिन्दु माना जाता है।

प्रस्तुत शोध में निवास क्षेत्र स्वतंत्र चर हैं। अतः यह जानना आवश्यक है कि वर्तमान समय में शिक्षा के प्रचार व प्रसार के कारण समाज के दृष्टिकोण में आने वाले परिवर्तनों के कारण यह जानना आवश्यक है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों का व्यक्तित्व व चरित्र किस तरह निर्मित हो रहा है, तथा इसके फलस्वरूप निवास क्षेत्र में भिन्नता के कारण आत्म–प्रत्यय किस प्रकार प्रभावित हो रहे हैं, उपरोक्त बातों का अध्ययन करना बहुत ही सामयिक प्रतीत हो रहा है। अतः उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान समस्या का चयन शोधकार्य हेतु किया गया है।

प्रस्तुत शोध से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोध कार्य किये गये हैं जैसे – **सिंह (2004)** ने हाईस्कूल के छात्रों का उनके परिवेश के परिप्रेक्ष्य में आत्म–प्रत्यय का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया और पाया कि छात्रों के आत्म–प्रत्यय के विकास में स्थान का प्रभाव नहीं पड़ता है। **चौधरी, स्वाती (2011)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय पर रहवास की प्रकृति, विद्यालय प्रबंधन की प्रकृति तथा अभिभावाकों की शिक्षा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। **रोजा, पनीमलार एम., शशिकुमार, एन. एवं फातिमा, प्रमिला एम. (2013)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों मध्य संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि आत्म–सम्प्रत्यय में सार्थक अंतर पाया गया। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्म्क परिपक्वता एवं आत्म–सम्प्रत्यय के मध्य सार्थक सहसंबंध पाया गया। **पाठक, रचना (2017)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के आत्म–प्रत्यय के विभिन्न घटकों उपलब्धि, आत्मविश्वास, कार्य अपेक्षा, हीन भावना की अनुभूति, भावनात्मक स्थायित्व में सार्थक अंतर पाया गया तथा शहरी छात्रों में आत्म–प्रत्यय के उपलब्धि,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आत्मविश्वास, कार्य अपेक्षा घटक ग्रामीण छात्रों की तुलना में उच्च पाए गए जबकि ग्रामीण छात्रों में हीन भावना की अनुभूति, भावनात्मक स्थायित्व घटक शहरी छात्रों की तुलना में उच्च पाए गए।

उपरोक्त अध्ययनों की समीक्षा करने पर नता चलता है कि आत्म–प्रत्यय पर निवास क्षेत्र के प्रभाव संबंधी अधिक शोध कार्य नहीं हुए हैं, अतः शोधकर्ता ने इस समस्या का चयन अपने शोध कार्य हेतु किया है।

उद्देश्य :–

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के आत्म–प्रत्यय (शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र) का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के आत्म–प्रत्यय (शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र) में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपकरण :–

आत्म–प्रत्यय प्रश्नावली – डॉ. राजकुमार सारस्वत

विधि :–

सर्वप्रथम होशंगाबाद जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक स्तर के चार विद्यालयों (2 शहरी एवं 2 ग्रामीणं) की कक्षा दसवीं में अध्ययनरत् 200 छात्रों (100 शहरी एवं 100 ग्रामीणं) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा कर उन पर 'आत्म–प्रत्यय प्रश्नावली' का प्रशासन किया गया एवं प्राप्तांकों के आधार पर मास्टर शीट तैयार की गई। मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिणामों का विश्लेषण :–

परिकल्पना – 1 : माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के आत्म–प्रत्यय (शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र) में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

तालिका

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के आत्म–प्रत्यय संबंधी तुलनात्मक परिणाम

आत्म–प्रत्यय के घटक	निवास क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
शारीरिक	शहरी	100	30.34	5.61	2.41	< 0.05
	ग्रामीण	100	32.03	4.22		
सामाजिक	शहरी	100	30.57	4.53	2.64	< 0.01
	ग्रामीण	100	28.84	4.74		
स्वभावगत	शहरी	100	31.71	5.73	0.56	> 0.05
	ग्रामीण	100	31.29	4.82		
शैक्षिक	शहरी	100	33.82	5.12	2.15	< 0.05
	ग्रामीण	100	32.37	4.40		
नैतिक	शहरी	100	31.35	6.22	0.44	> 0.05
	ग्रामीण	100	31.69	4.55		
बौद्धिक	शहरी	100	29.35	5.30	1.99	< 0.05
	ग्रामीण	100	28.01	4.15		
समग्र	शहरी	100	187.14	23.78	1.01	> 0.05
	ग्रामीण	100	184.23	16.33		

स्वतंत्रता के अंश – 198 0.05, 0.01 स्तर के लिये निधार्रित न्यूनतम मान – 1.97, 2.60

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के शारीरिक, सामाजिक, शैक्षिक व बौद्धिक आत्म–प्रत्यय में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 2.41, 2.64, 2.15, 1.99 स्वतंत्रता के अंश 198 पर सार्थकता के 0.05, 0.01, 0.05, 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान क्रमशः

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

1.97, 2.60, 1.97, 1.97 की अपेक्षाकृत अधिक हैं जबकि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के स्वभावगत, नैतिक एवं समग्र आत्म–प्रत्यय में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 0.56, 0.44, 1.01 स्वतंत्रता के अंश 198 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.97 की अपेक्षाकृत कम हैं।

अतः इन परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के शारीरिक, सामाजिक, शैक्षिक व बौद्धिक आत्म–प्रत्यय में सार्थक अंतर पाया गया तथा शहरी क्षेत्र के छात्रों में सामाजिक, शैक्षिक व बौद्धिक आत्म–प्रत्यय, ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों से बेहतर पाया गया जबकि ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों में शारीरिक आत्म–प्रत्यय, शहरी क्षेत्र के छात्रों से बेहतर पाया गया। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के स्वभावगत, नैतिक एवं समग्र आत्म–प्रत्यय में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गई परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के आत्म–प्रत्यय (शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र) में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा'' आंशिकतः अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के शारीरिक, सामाजिक, शैक्षिक व बौद्धिक आत्म–प्रत्यय में सार्थक अंतर पाया गया तथा शहरी क्षेत्र के छात्रों में सामाजिक, शैक्षिक व बौद्धिक आत्म–प्रत्यय, ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों से बेहतर पाया गया जबकि ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों में शारीरिक आत्म–प्रत्यय, शहरी क्षेत्र के छात्रों से बेहतर पाया गया। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के स्वभावगत, नैतिक एवं समग्र आत्म–प्रत्यय में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

// संदर्भ ग्रंथ सूची //

1. गुप्ता, एस. पी. (2005) ''सांख्यिकीय विधियां'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

2. भार्गव, महेश (1997) ''आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन'', हर प्रसाद भार्गव, 4/230 कचहरी घाट, आगरा, ग्यारहवां संस्करण
3. हकीम, एम.ए.; अस्थाना, विपिन एवं जायसवाल, सीताराम (1991) ''व्यक्तित्व मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, द्वितीय संस्करण
4. सिंह, अरूण कुमार, (2005) ''शिक्षा मनोविज्ञान'', भारती भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना।
5. सिंह, डॉ. आर.एन. (2007–08) ''आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, तृतीय संस्करण।
6. श्रीवास्तव, डी. एन. (2008) ''आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स , आगरा, तृतीय संस्करण।
7. श्रीवास्तव, डी. एन. (2007–08) ''आधुनिक समाज मनोविज्ञान'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, प्रथम संस्करण।
8. वालिया, जे.एस. (2005) ''शिक्षा मनोविज्ञान की बुनियादें'', पाल पब्लिशर्स, जालंधर
9. **बहल, ज्योति (2000)** *समाज व संस्कृति का बाल विकास एवं व्यक्तित्व पर प्रभाव,* प्राईमरी शिक्षक, जनवरी 2000, पृष्ठ क्रमांक 1–6
10. **पाठक, रचना (2017)** ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के आत्म–प्रत्यय एवं शैक्षणिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन'', *परिप्रेक्ष्य–इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च, वॉल्युम 6, इस्यु 1, जनवरी 2017, पेज नम्बर 806–807*
11. **तिवारी, सुषमा एवं लता, सुमन (2000)** *बालक के व्यक्तित्व निर्माण में गृह वातावरण का प्रभाव,* प्राईमरी शिक्षक, अक्टूबर 2000, पृष्ठ क्रमांक 54–57
12. **Chaudhri, Swati (2011)** *To Study of effect of the Self-concept, attitude towards education and socio-economic status on academic achievement of rural and urban senior-secondary students of Bhopal District,* Unpublished Ph.D. Education B.U. Bhopal.
13. **Roja, M. Panimalar; Sasikumar, N; Fathima, M. Parimala (2013)** "A study on Emotional Maturity and Self Concept at higher Secondary Level", *Research in Psychology and Behaviour Sciences, (2013) Val, I, No 5, Pg. No 81 – 83*